जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 29 संख्याः 253 प्रभात उदयपुर, शनिवार 16 जुलाई, 2022 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

सुर्ख रंगों वाली एशिया की एक सॉन्ग बर्ड ने ब्रिटेन के बाग बगीचों में घर बना लिया है। अत्यधिक आक्रामक रैड बिल्ड लाओथ्रिक्स चिड़ियाँ स्थानीय पक्षी प्रजातियों, खासकर रॉबिन और ब्लैकबर्ड जैसी गार्ड्न बड्र्स के लिए खतरा बन सकती हैं। जैतून जैसे हरे रंग, सुर्ख लाल चोंच और पीले गले वाली इन चिड़ियों ने देश के दक्षिणी भागों के बगीचों व जंगलों में खुद को स्थापित कर लिया है। विल्टशायर और सॉमरसैट में इनकी काफी तादाद है। साउथ वेल्स, मर्सीसाइड और कैन्ट में भी कुछ पक्षी हैं। पालतू पक्षियों के व्यापार में इन्हें पीकिन रॉबिन कहा जाता है। समझा जाता है कि यह जो आबादी है वह ''कैप्टिविटी'' से भागी है। दो दशकों में इस पक्षी ने यूरोप में अपनी रेंज में दोगुना विस्तार किया है तथा इटली, स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस में भी अब इनकी आबादी अच्छी तरह स्थापित हो गई है। क्लाइमेट संकट बढ़ने के साथ दक्षिणी ब्रिटेन का वातावरण तो इन्हें बहुत रास आ रहा है। शोध के मुख्य लेखक, यू.के. सैंटर फॉर इकॉलजी एण्ड हाइड्रॉलजी के रिचर्ड ब्रोटन ने कहा कि, ''ये अगले रिंग्ड नैक्ड पैराकीट साबित हो सकते हैं और यह ''चेंज'' लोगों को नज़र आएगा।'' ब्रिटेन में वर्ष 2019 से 2022 के बीच रैड बिल्ड लाओथ्रिक्स नज़र आने के 16 रिकॉर्ड्स हैं, जिनमें से 10 में इनके झुण्ड नज़र आने की बात कही गई थी। शोधकर्ताओं को सोशल मीडिया और गूगल इमेजेज़ ढूंढने पर ये रिकॉर्ड मिले। ब्रोटन ने कहा, और भी कई पक्षी हैं जिनके बारे में हमें पता नहीं है। तेज और मधुर आवाज़ में गाने वाली इन एशियन सॉन्ग बड्र्स को जैपनीज़ नाइटिंगेल भी कहते हैं। चूंकि ये एकांतवासी पक्षी हैं इसलिए लम्बे समय बाद जब इनकी जानकारी मिली तब तक इनकी आबादी बहुत बढ़ चुकी थी। रैड बिल्ड लाओथ्रिक्स की जीवनशैली, गाना, घर बनाने का तरीका, सब कुछ स्थानीय रॉबिन, ब्लैक बर्ड और ब्लैक कैप्स जैसा है, इसका अर्थ है कि, इन पक्षिओं के लिए लाओथ्रिक्स गंभीर खतरा हैं। रॉबिन और ब्लैक बर्ड टैरिटोरियल पक्षी हैं जबकि रैड बिल्ड लाओथ्रिक्स सामूहिक रुप से घोंसले बनाती हैं, ताकि ज्यादा सघन प्रजनन कर सकें। छोटी सी, मात्र 15 सेंटीमीटर लम्बी ये चिड़ियाँ भारत और नेपाल में हिमालय से लेकर चीन, म्यांमार और वियतनाम तक समूचे दक्षिण पूर्व एशिया में मिलती हैं। इन्हें घने और नमी वाले जंगल पसंद हैं। यूरोप में ये 20वीं सदी के अंत में आई थीं और अब 37 से ज्यादा अलग-अलग क्षेत्रों में मिलती हैं।

राहुल कांग्रेस के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ेंगे या नहीं?

यह गुत्थी अभी सुलझी नहीं है, पर प्रियंका गांधी ने अब पार्टी के पदाधिकारियों व अन्य नेताओं से सीधा सम्पर्क करना शुरू कर दिया है

- **क्या प्रियंका गांधी चाहती हैं कि नेता व पदाधिकारी अपनी वफादारी राहुल से शिफ्ट कर के उनके प्रति रखें।**
- **इसी संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि, हाल ही में ए.आई.सी.सी. में कई नये सचिव नियुक्त हुए हैं। उन्हें नियुक्ति से पूर्व सोनिया गांधी ने स्वयं फोन करके सूचित किया कि, उनका चयन कर लिया गया है और उन्हें सचिव बनाया जा रहा है। शाम तक उनके पास नियुक्ति पत्र पहुंच गये थे और पार्टी ने उनके नाम उजागर करते हुए प्रेस विज्ञप्ति भी जारी की थी।**
- **क्या इसका मकसद यह था कि, ये नव नियुक्त पदाधिकारी प्रियंका गांधी से अनुग्रहित हों।**
- **दूसरी ओर राहुल गाँधी इस बात में रूचि नहीं लेते कि, किस को नियुक्त किया जा रहा है और किस को नहीं। राहुल के खिलाफ यह भी शिकायत दबी ज़ुबान में की जाती है कि, वे अपने वफादारों के पक्ष में कभी खड़े नहीं होते।**
- **दूसरी ओर यह भी उल्लेखनीय है कि, प्रियंका कई राज्यों के मामलों में, जैसे पंजाब, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि में सीधी और स्पष्ट रूचि ले रही हैं।**

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। गांधी परिवार में समस्याएं बढ़ती जा रही है क्योंकि प्रियंका गांधी पार्टी के पदाधिकारियों व अन्य नेताओं से सीधा सम्पर्क कर रही है ताकि उनकी निष्ठा उनके भाई राहुल गांधी से हटकर उनके स्वयं के प्रति हो जाए।

कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव 20 अगस्त से 20 सितम्बर के बीच में होना है और सूत्रों का कहना है कि प्रियंका गांधी चाहती है कि पार्टी में ज्यादा से ज्यादा लोग यह मांग करे कि अगर राहुल गांधी अध्यक्ष नहीं बनना चाहें तो प्रियंका गांधी को अध्यक्ष बनाया जाए। ऐसा उदयपुर शिविर में भी हुआ था जहां आचार्य प्रमोद कृष्णम ने यह मांग उठाई थी।

समझा जाता है कि हाल ही में बड़ी संख्या में ए.आई.सी.सी. सचिवों की नियुक्ति हुई है, उन सभी को प्रियंका गांधी ने फोन किया था और कहा कि उन्हे चुना गया है और सचिव नियुक्त किया जा रहा है। इस प्रकार यह जताया गया कि उन्हे प्रियंका गांधी ने नियुक्त किया है।

शाम तक उनके नियुक्ति पत्र जारी हो गए और पार्टी ने उनके नामों की घोषणा करते हुए प्रैस रिलीज़ जारी कर दी।

यह स्पष्ट है कि वे प्रियंका के प्रति एहसान रहेंगे और भले ही राहुल गांधी को उनका नेता बताया जाए तो भी वे प्रियंका का ही गुणगान करेंगे।

रोचक बात यह है कि राहुल गांधी कभी भी अपने लोगों के लिए खड़े नहीं होते हैं और किसे क्या पद दिया जा रहा है, इसमें भी उन्हें ज्यादा रूचि नहीं है।

पार्टी में नेतृत्व संघर्ष के मुद्दे पर भारी चिंता है क्योंकि राहुल इसमें खास रूचि नहीं दिखा रहे हैं और प्रियंका अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाती जा रही है।

वे विभिन्न राज्यों में पार्टी मामलों पर सीधी निगरानी कर रही है और हस्तक्षेप कर रही है, चाहे वह राजस्थान हो, छत्तीसगढ़ हो, पंजाब हो या कोई अन्य राज्य।

राहुल गांधी अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ेंगे या नहीं, इस पर भी अटकलें ही लग रही हैं।

कांग्रेस ने मोदी के जुमले से वार किया प्र.मंत्री पर

- **कांग्रेस के अनुसार प्र.मंत्री ने 2014 में पुरजोर ढंग से कहा था, एक स्ट्रॉंग प्र.मंत्री चाहिये, रूपये के दाम गिरने से रोकने के लिये, पर अब रूपये की कीमत जो 2014 में 58 रूपये थी, एक डॉलर की तुलना में, पर अब एक डॉलर की कीमत लगभग अस्सी रूपये हो गयी है।**
- **कांग्रेस के प्रवक्ता ने सवाल उठाया कि, अब हम मानें कि भारत का प्रधानमंत्री ''स्ट्रॉंग'' नहीं कमजोर हैं।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। ''जिस देश की सरकार अनैतिक और भ्रष्ट होती है वहां की करेंसी का मूल्य गिरता है। मैं कभी-कभी यह आश्चर्य करता हूं कि क्या केन्द्र सरकार और गिरते हुए रूपए के बीच रेस लग रही हैं। प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा रूपए के गिरते मूल्य से जुड़ी हुई हैं, यह जितना गिरेगा, प्रधानमंत्री की विश्वसनीयता और गरिमा उतनी ही गिरेगी।''

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक भाषण में उक्त बयान ''जुमला'' दिया था, जिसे कांग्रेस ने फिर से उठाया है। पार्टी की सोशल मीडिया प्रमुख एवं प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेट ने एक प्रैस कांफ्रेंस में आश्चर्य जताते हुए कहा कि मोदी को अपने स्वयं के तर्क पर आप क्या कहना है।

उन्होंने कहा कि वह तो मोदी के स्वयं के शब्दों को बता रही हैं कि गिरता रूपया, उनकी गिरती प्रतिष्ठा है क्योंकि पहली बार भारतीय रूपए का मूल्य अमेरिकी डॉलर की तुलना में 80 रूपए से अधिक हो गया है और इसका कारण उनका आर्थिक कुप्रबंधन और बर्बाद भारतीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने से विफल रहना हैं।

यह ध्यान दिलाते हुए कि यह वही रूपया है, मोदी स्वयं जिसका संबंध प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा से जोड़ते थे, सुप्रिया ने रूपए की अनियंत्रित गिरावट को लेकर अपना यह संदेह साझा किया कि क्या मोदी हमारी करेंसी के साथ भी एक सैन्चुरी बनाने की तैयारियां कर रहे है। जैसी कि उन्होंने पैट्रोल के साथ बनाई हैं।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से पूर्व मोदी ने झूठा दावा किया था कि रूपए को मजबूत करने के लिए एक ''मजबूत प्रधानमंत्री'' की जरूरत है, लेकिन आज वह भारतीय करेंसी के लिए जहरीले और सर्वाधिक हानिकारक साबित हुए हैं क्योंकि इस कथित मजबूत प्रधानमंत्री ने अब तक के इतिहास में रूपये को सबसे कमजोर किया है। इसका मूल्य पिछले छह माह में 7 प्रतिशत से अधिक गिर गया हैं। सुप्रिया ने कहा कि ''प्रधानमंत्री कब तक करोना, रूस और यूक्रेन युद्ध की आड़ लेते रहेंगे? क्योंकि यह वही रूपया है जिसका मूल्य वर्ष 2014 में 1 डॉलर की तुलना में सिर्फ 58रूपए का और पिछले आठ वर्षो में पहले तो इसने रिटायरमैंट की आयु पार की, फिर मार्ग दर्शक मण्डल में चला गया और अब 80रूपए को पार कर गया है। पिछले 8 वर्षों में 1 डॉलर की तुलना में 22 रूपए बढ़ गए हैं। मोदी, आप अपनी गिरती हुई प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता के बारे में सोचिए। ये आपके ही शब्द है, ना कि हमारे।''

उन्होंने कहा कि रूपए के मूल्य में लगातार हो रही गिरावट कमर तोड़ मंहगाई को और तेजी बढ़ाएगी। पैट्रोल, डीजल और रसोई गैस के साथ ही आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ेंगे और ट्रेन व बसों के किराए में वृद्धि होगी जिसका सीधा असर हमारे भोजन की थाली में दिखाई देगा।

उन्होंने मोदी के चाटुकारों के कथन को खारिज कर दिया, जिसके अन्तर्गत वे मुद्रा के मूल्य में आई जबरदस्त गिरावट के लिये अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2013 के टेपर टैन्ट्रम के दौरान कांग्रेस के नेतृत्व वाली यू.पी.ए. सरकार ने स्थिति को कैसे सँभाला था, जब विदेशी निवेशकों ने देश छोड़कर जाना शुरू कर दिया तथा रूपये के मूल्य में 15 प्रतिशत की गिरावट आई थी तथा मई से अगस्त के बीच रूपया 58रू प्रति डॉलर से 69 रू प्रति डॉलर हो गया था।

उन्होंने कहा कि उस समय यू.पी.ए. सरकार तथा तत्कालीन आर.बी.आई. गवर्नर रघुराम राजन ने मिलकर रूपये की स्थिति सँभालने के लिये कई तरीके अपनाये थे। इस प्रयासों के फलस्वरूप रूपये का मूल्य, तो 4 महीने के अन्दर 58 रूपए प्रति डॉलर हो ही गया था, एक ही साल में जी.डी.पी. ग्रोथ की दर 5.1 प्रतिशत से बढ़कर 6.9 प्रतिशत हो गई थी। इसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोविड 19 संक्रमण

- **लगातार दूसरे दिन कोविड-19 संक्रमण के 20,000 से ज्यादा केस आए हैं और शुक्रवार को तो मरने वालों की संख्या भी बढ़कर 47 हो गई।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। भारत में शनिवार को लगातार दूसरे दिन कोविड-19 के 20,000 से अधिक नये केस आये हैं। शुक्रवार को 20,038 केस आये थे। तत्संबंधित मौतों की संख्या बढ़कर 47 हो गई, जिसमें केरल में पिछले दिन हुई 17 मौतें शामिल हैं।

पिछले 27 घंटे में सर्वाधिक 5 कोविड-19 मौतें पश्चिम बंगाल में हुई, इसके बाद महाराष्ट्र में 4, पंजाब और केरल में 3-3, हरियाणा, बिहार, आन्ध्र प्रदेश तथा उत्तराखंड में से प्रत्येक राज्य में 2 तथा दिल्ली गोवा, गुजरात, कर्नाटक, हिमाचल, नागालैण्ड एवं सिक्किम में 1-1 मौत हुई है।

देश में कोविड संक्रमण का कुल आँकड़ा 4,37,10,027 पहुँच गया, जिनमें से 5,25,604 लोगों की मृत्यु हो गई तथा 4,30,45,350 ठीक हो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अगर बच्चे सात बजे स्कूल जा सकते हैं, तो जज 9 बजे कोर्ट में क्यों नहीं आ सकते'

सुप्रीम कोर्ट के भावी मुख्य न्यायाधीश, उदय उमेश ललित के इस सोच का व्यापक असर पड़ेगा न्यायालयों के कामकाज पर

- **सुप्रीम कोर्ट के दो न्यायाधीशों, रवीन्द्र भट्ट व सुधांशु धूलिया ने आज अपनी बैंच का कामकाज 9.30 बजे शुरू कर दिया, साढ़े दस बजे के बजाय।**
- **न्यायाधीश ललित का मानना है कि, अगर सुप्रीम कोर्ट का कामकाज सुबह नौ बजे शुरू होता है और दो बजे अपना काम खत्म करके उठ जाते हैं तो, उन्हें बाकी सारी शाम और समय मिल जाता है, अन्य मुकदमों की फाइलें पढ़ने के लिये।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस उदय उमेश ललित आगामी अगस्त माह में चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) बनने वाले हैं, और इस पद पर तीन महीने तक रहेंगे। उन्होंने कोर्ट की कार्यवाही सुबह जल्दी शुरू करने का शुक्रवार को पक्ष लिया। उन्होंने कहा कि यदि बच्चे सुबह 7 बजे स्कूल जा सकते हैं तो जज और वकील प्रात: 9 बजे काम शुरू क्यों नहीं कर सकते जो कि एक आदर्श समय है।

जब उनकी अध्यक्षता वाली एक बैंच ने सुबह प्रात:10.30 बजे के स्थान पर एक घंटा पूर्व 9.30 बजे दिन की कार्यवाही शुरू की तब उनकी टिप्पणियां तब सामने आईं।

इस बैंच में जस्टिस एस. रविन्द्र भट और जस्टिस सुधांशु धूलिया भी थे।

जमानत के एक प्रकरण में पेश हुए पूर्व अटॉर्नी जनरल एवं सीनियर एडवोकेट मुकुल रोहतगी ने साधारण समय के बजाए दिन को लेकर सुनवाई के अंत में बैंच की तारीफ की।

जस्टिस ललित ने अपने विचार व्यक्त किए कि यदि कोर्ट अपना काम जल्दी शुरू कर दें तो वह दिन का काम जल्दी निपटा सकती हैं और जजों को अगले दिन सुनवाई किए जाने वाले केसों पर नज़र डालने के लिए शाम को अधिक समय मिलेगा।

जस्टिस ललित ने कहा कि ''अदालतें प्रात: 9 बजे अपना काम शुरू कर मध्यान्ह 11.30 बजे आधा घंटे का ब्रेक ले सकती हैं और फिर दोपहर 2 बजे तक दिन का काम निबटा सकती हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बी.सी.सी.आई.

- **बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट से मांग की है कि जिस याचिका में बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष सौरव गांगुली और सचिव जय शाह का कार्यकाल बढ़ाने की मांग की गई है, उसकी शीघ्र सुनवाई की जाए।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया (बी.सी.सी.आई.) ने शुक्रवार को अपनी उस याचिका की शीघ्र सुनवाई की माँग की, जिसमें भारतीय क्रिकेट के इस सर्वोच्च निकाय के अध्यक्ष सौरव गांगुली तथा इसके सचिव जय शाह के वर्तमान कार्यकाल की वृद्धि की माँग की गई हैं। ये दोनों पदाधिकारी क्रिकेट-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यूक्रेन युद्ध के बाद रूस इतना मुस्कुरा क्यों रहा है?

कम माल बेच रहे हैं, पर फिर भी आमदनी बढ़ रही है, इससे खुशी तो होगी ही!

- **अमेरिका व अन्य यूरोपीय देशों द्वारा आर्थिक प्रतिबंध लगाने पर, एक बार रूसी मुद्रा गिरी थी, पर अब रूबल की कीमत युद्ध के पहले की कीमत से भी ज्यादा हो गयी है।**
- **कारण सीधा है, आर्थिक प्रतिबंधों के बाद, रूसी तेल और गैस को खरीदना मुश्किल हो गया था, स्वाभाविक ही है, ''शॉर्टेज'' (किल्लत) के कारण रूसी तेल व गैस की कीमतों में भारी वृद्धि हो गयी।**
- **प्राकृतिक गैस का प्रचलन बहुत बढ़ गया, ''प्रदूषण-फ्री'' होने के कारण। पर, यूरोप, रूस से उपलब्ध गैस पर इतना निर्भर व निश्चिन्त हो गया था कि, न तो वैकल्पिक स्रोत की ओर देखा और ना ही उनसे बातचीत की। अब यह भी सच है कि, गैस केवल ''लिक्विफाई'' (तरलीकरण) करके ही ट्रांसपोर्ट की जा सकती है और इतनी भारी संख्या में तरलीकरण प्लान्ट अभी उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि कभी लगाये ही नहीं गये।**
- **बहरहाल प्राकृतिक गैस के अभाव में ''फर्टिलाइज़र'' का उत्पादन भी नहीं हो रहा, क्योंकि फर्टिलाइज़र बनाने के लिये प्राकृतिक गैस, मूल ''रॉ मटीरियल'' है।**
- **फर्टिलाइज़र के अभाव में कृषि उत्पादन तो गिरेगा ही।**
- **एनर्जी के बाद, अनाज का भी संकट शायद एक साथ झेलने के लिये विश्व तैयार नहीं है। सबसे ज्यादा संकट उन देशों के सामने है, जो अब तक चीन पर निर्भर थे, अपनी इकॉनमी को चलाने के लिये। ऐसे देशों की सूची में प्रथम दो नाम हमारे पड़ोसी देशों के हैं, श्रीलंका व पाकिस्तान।**

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। यूक्रेन युद्ध के साढ़े तीन माह गुजरने के साथ ही इसके हानिकारक प्रभाव बड़े और छोटे देशों की अर्थव्यवस्था को समान रूप से पीड़ित कर रहे हैं। ऊर्जा की कीमतें आसमान छू रही हैं और उन्होंने लागत के स्थापित मानदण्डों को गड़बड़ा दिया है, भोजन संकट बढ़ रहा है और इससे गरीब देश सर्वाधिक प्रभावित हैं। आपूर्ति श्रृंखला विकृत हो गई है और जी.डी.पी. ग्रोथ रेट्स में भी कमी आ गई है।

विश्व अर्थव्यवस्था जो महामारी की भारी मार से उबरने लगी थीं फिर से मुश्किल में आ सकती है। इससे फिर से गरीबी आ सकती है, जिसे काफी हद तक नियंत्रित कर दिया गया था।

यूक्रेन वॉर और इसके प्रभाव पर गत सप्ताह दिल्ली के एक विचार मंथन हुआ जिसमें कई अर्थशास्त्री मौजूद थे, मॉन्टैक सिंह अहलुवालिया, शिवशंकर मैनन, मार्टिन वूल्फ (फाइनैंशियल टाइम्स, लंदन) और अजय सिंह मीटिंग में मौजूद थे। नोबल सम्मान प्राप्त लॉर्ड निकोलस स्टर्न श्रोताओं में चुपचाप बैठे थे, जब उन्हें पहचाना गया तो उनसे भी राय मांगी गई।

मार्टिन वूल्फ अपने डेटा बैंक, चार्ट और रेखाचित्रों के साथ तैयार थे, जिसके आधार पर उन्होंने साबित किया कि अर्थ व्यवस्थाएं किस कदर पीड़ित हैं जो संभवतया कुछ अतिशयोक्ति पूर्ण था। हम सभी इस मुश्किल को महसूस कर रहे हैं। दुनियाभर में अर्थव्यवस्थाओं में मंदी जैसे हालात आ रहे हैं, खास कर उनमें, जिनकी पूर्व में चीन ने मदद की थी, मसलन श्रीलंका और पाकिस्तान।

शायद बहुतों, खासकर पश्चिमी देशों के लिए दुख की बात यह है कि जिस देश को आर्थिक रूप से मटियामेट होते हुए देख रहे थे वह बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा हैं। अनुमान लगाने की जरूरत नहीं है। इस युद्ध के शुरु होने का पहला परिणाम है वैश्विक ऊर्जा संकट।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शिव पूजा

- **वाराणसी ज्ञानवापी मस्जिद में मिले शिवलिंग की पूजा की अनुमति के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक और याचिका दर्ज की गई है।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जुलाई। सर्वोच्च न्यायालय में एक दायर करके, वाराणसी के ज्ञानवापी मस्जिद कॉम्प्लैक्स में पाये गये शिवलिंग की धार्मिक विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने की अनुमति माँगी गई है।

'श्री कृष्ण जम्मू भूमि मुक्ति दल' के अध्यक्ष राजेश मणि त्रिपाठी द्वारा दायर इस याचिका में कहा गया है कि सावन का महीना 14 जुलाई को शुरु हो गया है तथा 12 अगस्त तक चलेगा। सावन के महीने में, हिन्दू भक्तों को यह अनुमति दी जाये कि वे ''अन्त:करण की स्वतंत्रता तथा व्यवसाय, व्यवहार की स्वतंत्रता तथा धर्म के प्रचार-प्रसार'' के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)